पुरानी व्यवस्थाएँ टूट जाती है
और सामाजिक आधार नष्ट हो जाता है।
संस्कृति में, समाज में मौलिक रूप से
बदलाव हो जाता है।

महाराष्ट्र की पारम्परिक कला लगभग नष्ट हो गई,
तब घुमंतू जनजातियों ने
परम्परागत दृश्यकला को जीवित रखा।
आखिरी उम्मीद के चार सांस ..... रोक के रखे....
वडार... मरीआईवाले... डक्कलवार... चित्रकथी।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

ISBN: 978-93-82396-91-8
Price Rs. 695/-

Cover Design- Vikram Kulkarni

महाराष्ट्र की घुमंतू जनजातियों की दृश्यकला परम्पराएँ : एक सांस्कृतिक अध्ययन

महाराष्ट्र की घुमंतू जनजातियों की दृश्यकला परम्पराएँ :
एक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. विक्रम कुलकर्णी

डॉ. विक्रम कुलकर्णी एक चित्रकार के रूप में अपनी अलग पहचान बना चुके हैं। उन्होने भारत और विदेशों में 75 से अधिक एकल और समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया है। इस कला यात्रा के दौरान, उन्होंने लैंडस्केप पेंटिंग से अमूर्त चित्रकला की ओर परिवर्तन किया है और उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।
2004 से एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय में चित्रकला विभाग में अध्यापन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, दृश्य कला के अनुसंधान में रुचि के कारण उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं में शोध पत्र लिखे हैं।
2018 में उन्हें एशियाटिक सोसाइटी, मुंबई की फ़ेलोशिप से सम्मानित किया गया तथा 2019-21 में, उन्हें भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की टैगोर फ़ेलोशिप प्राप्त हुई। पारम्परिक कला की खोज में विभिन्न विद्याशाखाओं का एकत्रित अध्ययन उनके शोधकार्य को अलग करता है।

महाराष्ट्र की घुमंतू जनजातियों की दृश्यकला परम्पराएँ : एक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. विक्रम कुलकर्णी

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला

First published 2023
© Indian Institute of Advanced Study, Shimla

All rights reserved.
No part of this book may be reproduced
or transmitted, in any form or by any means,
without the written permission of the publisher.

ISBN: 978-93-82396-91-8

Published by
The Secretary
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005

Typeset at:
Sai Graphic Design, New Delhi

Cover Artwork by Dr. Vikram Kulkarni

Printed at Dipi Fine Prints, New Delhi

विषयानुक्रम

अध्याय एक: **घुमंतुओं की कला एवं संस्कृति- सैद्धांतिक पृष्ठभूमि (1-11)**

अध्याय दो: **विषय प्रवेश (12-82)**

प्राचीन उपासना और मातृसंस्कृति
गावगाडा
महाराष्ट्र की घुमंतू जातियाँ और जनजातियाँ
जातिपुराण का स्वरूप
दक्षिणापथ की मध्ययुगीन दृश्यकला का संक्षिप्त अवलोकन
भारत की प्रदर्शनकारी चित्रकला का परिचय
भारत की कथन परम्परा का परिचय
दक्षिणापथ के पारम्परिक चित्र- शिल्प के केंद्र और कलाकार जनजातियाँ
महाराष्ट्र की लोक-उन्मुख नई कला

अध्याय तीन: **वडार: मेहनतकश हैं, चोर लुटेरे नहीं ! (83-191)**

वडार- पूर्व अनुसंधान
वडार जाति की प्रादेशिक व्यापकता
वडार – लोक जीवन
वडार – लोककथा और गीत
वडार – उत्सव, त्योहार और यात्रा
जलदी (गंगास्थल)
प्रदेश के पूजामंदिर और वडार पूजामंदिर
देवता मूर्ति और चित्र
पितृपूजा
पूजामंदिर की वस्तुएँ
पोतराज
अनुष्ठान विषयक चित्र
द्वारपाल और रक्षक आकृति
स्त्री आकृति
जुलूस
पशु, पक्षी और डिजाइन

वडार परिवार का चित्र
रामायण और महाभारत
छत्रपति शिवाजी महाराज और वडार
अंग्रेज और वडार
आपराधिक जाति कानून

अध्याय चार: **मरीआईवाले: भक्त से भिखारी तक** **(192-269)**
पोतराज के प्रकार
पोतराज और मरीआईवाले के बारे में पूर्व अनुसंधान
घुमंतू जीवन
भिक्षावृत्ति
उपासना
त्योहार, उत्सव और अनुष्ठान
विवाह और कुल
जातिपंचायत
मृतक अनुष्ठान
वर्तमान
मरीआईवाले का पूजामंदिर
देवी की मूर्ति और चित्र
शैव, वैष्णव और पौराणिक चित्र
पोतराज और बलि का चित्र
कृषक और पोतराज चित्र
लोकसंस्कृति
व्यावसायिक
अन्य चित्रविषय
यमपुराण

अध्याय पाँच: **डक्कलवार: अंत्यज के चारण** **(270-349)**
मांग की उपजातियाँ और व्यवसाय
गाँव में मातंगों का स्थान
मांग और किसान
मांग का धार्मिक जीवन
मांग के चारण- डक्कलवार
डक्कलवार जातिपुराण
तेलुगु प्रदेश का जांबपुराण

डक्कली और डक्कलवार कथा में तुलना
डक्कलवार जातिपुराण के पटचित्र का मूल और विकास

अध्याय छह: **चित्रकथी: मराठा चित्रशैली की ढलती शाम** **(350-415)**
चित्रकथी परिचय
चित्रकथी जनजाति का समाज जीवन
चित्रकथी के विभिन्न कला प्रकार
चित्रकथी की कथाएँ और प्रस्तुतिकरण
चित्रकथी का चित्रविश्व
पिंगुली के कुछ चित्रों का विश्लेषण
कुछ पैठण चित्रों का विश्लेषण
चित्रकथी का वर्तमान

अध्याय सात: **कला परिप्रेक्ष्य** **(416-469)**
लोक कला या दरबारी कला
परम्परागत कला की व्याप्ति
कारीगर जातियाँ और परम्परागत कलाएँ
प्रस्तुत कलारूपों की उत्पत्ति और विकास
प्रस्तुत कलारूपों की अंतरक्रिया
आधुनिकता और पश्चिमी कला से सामना
चित्रभाषा
घुमंतुओं की जीवन दृष्टि और दृश्यकला
घुमंतुओं की दृश्यकला की आखरी सांस

अध्याय आठ: **सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य** **(470-522)**
संघर्ष
समन्वय
समरसता
उपासना और धर्म का तानाबाना
पौराणिकीकरण और संस्कृतिकरण
जातिपुराण
वंचितों के दृष्टिकोण
गावगाडा- अन्यायपूर्ण नियंत्रण और अपरिहार्यता

संदर्भ **(523-533)**